47

कटनी का समय!

(14:14-20)

भविष्य जानने के लिए निराश लोगों द्वारा हर वर्ष करोड़ों डॉलर खर्च कर दिए जाते हैं। वे अपना राशिफल देखते हैं। वे ''आध्यात्मिक गुरुओं'' और ''उपाय करने वालों'' के पास जाते हैं। वे तान्त्रिकों या सयानों के पास जाते हैं। कई तो यह बताने की कोशिश में कि कल और उसके बाद क्या होगा कम्प्यूटर पर भी कार्यक्रम बनाते हैं। कुल-मिलाकर ये सब अनुमान होते हैं, जिनमें कुछ तो ज्ञान और अनुभव के आधार पर होते हैं और कुछ केवल हवा में तीर। भविष्य के गर्भ में क्या है, इसे परमेश्वर के अलावा और उस पुस्तक के अलावा, जिसमें उस भविष्य की झलक मिलती है, किसी को नहीं मालूम।

भविष्य के बारे में, बाइबल जो सबसे महत्वपूर्ण बात बताती है वह यह है कि मनुष्यजाति एक चरम के पल की ओर बढ़ रही है, जिसमें मसीह वापस आएगा और हर व्यक्ति परमेश्वर के सामने खड़ा किया जाएगा, ताकि उसका न्याय हो।

> तब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्ग दूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियां उसके सामने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। और वह भेड़ों को अपनी दहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा (मत्ती 25:31-33)।

प्रकाशितवाक्य 14:14-20 उस नाजुक समय के बारे में *कटनी* का रूपक देते हुए बताता है।[1] अपनी शिक्षा में यीशु ने इसी रूपक का इस्तेमाल किया।[2] जब उसके चेलों ने गेहूं और जंगली बीज के उसके दृष्टांत का अर्थ पूछा तो उसने कहा:

> ... कटनी जगत का अन्त है, और काटने वाले स्वर्गदूत हैं।... मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करने वालों को इकट्ठा करेंगे। और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे, वहां रोना और दांत पीसना होगा। उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे; ... (मत्ती 13:39-43)।

एक अन्य अवसर पर यीशु ने बढ़ने वाले बीज का दृष्टांत इन शब्दों के साथ समाप्त

किया: ''परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह [अर्थात किसान] तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है'' (मरकुस 4:29)।[3]

कटनी के समय का उदाहरण विशेषकर उस समय बड़ा सार्थक था जब लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती-बाड़ी था। यह असामान्य रूप से भी उपयुक्त था, क्योंकि कटनी का समय अनाज के बढ़ने के लम्बे अन्तराल के बाद आता था और इस प्रक्रिया का चरम ही था।[4] बचपन में मैं कई प्रकार की फसलों की कटाई में सहायता करता था। एक बार की बात है कि गर्मियों में मैंने गेहूं की कटाई की। कटाई करना बड़ा ही कठिन, थका देने वाला और मिट्टी से मिट्टी होने वाला काम है। परन्तु यह रोमांच से भरा भी है, क्योंकि यह परिश्रम के महीनों का अन्त है।

14:14-20 पहली बार पढ़ते हुए:

> ... दो कटाइयां होती प्रतीत होती हैं: 14:14-16, 17-20 परन्तु ये एक ही घटना के दो पहलू हैं, यानी समकालिक दर्शन के दो अभिन्न भाग हैं। एक ही कटनी है जिसके दो परिणाम हैं: जिसमें एक परिणाम नये यरूशलेम के लोगों के लिए है (14:14-16); और एक गिरे हुए बाबुल के लोगों के लिए है (आयतें 17-20)।[5]

जी. बी. केयर्ड ने 14:14-20 वाले दर्शन के दो भागों को ''एक ही विषय की भिन्नताएं'' कहा है।[6]

इस बात में संदेह है कि ये आयतें मनुष्यजाति के न्याय के अन्तिम दिन को दिखाती हैं या जिस रूप में इसे दिखाया गया है उसके रोमी साम्राज्य के पतन को। भाषा से तो मुझे यह लगता है कि यह अन्तिम न्याय का स्पष्ट चित्रण है, परन्तु जो भी हो हर हाल में यह उस अन्तिम दिन की ही बात है। इससे हम सब को यह पूछने के लिए विवश हो जाना चाहिए कि ''मसीह के लौटने पर, क्या मुझे गेहूं की तरह गोदाम में रखा जाएगा या मुझे दाख की तरह परमेश्वर के क्रोध के कोल्हू में लताड़ दिया जाएगा?''

कटनी पर पहले हम परमेश्वर के विश्वासियों के दृष्टिकोण से विचार करेंगे, फिर हम उनके दृष्टिकोण से देखेंगे जो उसके पीछे चलने से इनकार करते हैं।

कटनी-और आनन्द (14:14-16)

> और मैंने दृष्टि की, और देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा[7] कोई बैठा है, जिस के सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है (आयत 14)। (मनुष्य के पुत्र सरीखा बादल पर बैठा कोई का चित्र देख।)

पुस्तक में पहले दर्शन में (1:12-3:22), यूहन्ना ने ''दीवटों के बीच में मनुष्य के पुत्र सरीखा एक पुरुष को देखा'' (1:13) था, जो यीशु मसीह था।[8] बिना किसी शक के

यह भी यीशु ही था (देखें यूहन्ना 5:27)।[9]

पहले दर्शन में, यीशु सोने के दीवटों में चल रहा था (1:13; 2:1); इस दर्शन में वह बादलों पर सवार था, जो उसके ईश्वरीय होने के अधिकार को दिखाता है (भजन संहिता 104:3; यशायाह 19:1)। अध्याय 1 में यीशु ने सोने के पटुके के साथ राजकीय वस्त्र पहले हुए थे (1:13); यहां पर उसके सिर पर सोने का मुकुट था।

मूल धर्मशास्त्र में ''सोने का मुकुट'' शब्द असामान्य है, क्योंकि ''मुकुट'' *stephanos* अर्थात विजय के मुकुट का अनुवाद है। आमतौर पर *स्तिफनोस* हरी टहनी से बनता था न कि किसी कीमती धातु से। इस रूपक में, ''विजय और राजकीय ... दोनों विचार मिल गए।''[10]

परन्तु सबसे बड़ा अन्तर यह है कि पहले दर्शन में मनुष्य के पुत्र के पास तलवार थी (1:16) यहां उसके पास हंसुआ था। हंसुआ कटाई करने वाला औज़ार होता है, जिसमें मुट्ठी लगी अर्ध गोलाकार आरी होती है।

ऐसा औज़ार यूहन्ना के समय में अनाज या घास काटने के लिए इस्तेमाल किया जाता था और आज भी कई जगहों पर इसे इसी काम के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है।[11] इसी तरह मनुष्य के पुत्र ने कटनी की तैयारी में हंसुआ पकड़ा हुआ था। यीशु पहली बार हमारा उद्धारकर्ता बनकर आया था, यानी वह हमारे पापों के लिए मरने के लिए आया। दूसरी बार आने पर वह हमारा न्याय करने वाला होगा।

दर्शन में यीशु को बैठे और प्रतीक्षा करते क्यों दिखाया गया है ? इसका एक कारण यह हो सकता है कि ''उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता'' (मरकुस 13:32)।

दर्शन में, मसीह को अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी थी। ''फिर एक और स्वर्गदूत[12] ने मन्दिर में से [परमेश्वर की उपस्थिति से] निकलकर, उस से जो बादल पर बैठा था, बड़े शब्द से पुकारकर कहा कि अपना हंसुआ लगाकर लवनी कर, क्योंकि लवने का समय[13] आ पहुंचा है, इसलिए कि पृथ्वी की खेती पक चुकी है'' (आयत 15)।

मूल धर्मशास्त्र में, अनुवादित शब्द ''लवने'' का मूल अर्थ ''पक चुका'' है। यह हमें यह बताता है कि दर्शन के इस भाग का संकेत अनाज की कटाई है। अनाज की बल्लियां कटाई से पहले पूरी तरह सूख गई होनी चाहिए। अपने मन में हवा के झोंके से गेहूं के पके सुनहरी खेतों की कल्पना करें।

किसान के उत्सुकता से कटाई की प्रतीक्षा करते हुए ऐसा लगता है कि जैसे समय ठहर गया हो। परन्तु अन्ततः कटाई का समय आ जाता है (याकूब 5:7)। परमेश्वर के परेशान बालक को कई बार लग सकता है कि प्रभु ''अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर करता है'' (2 परतस 3:9), परन्तु डरता नहीं कि कटाई का समय आ जाएगा! यह आज भी आ सकता है; कल भी आ सकता है; अब से कई साल बाद आ सकता है, परन्तु आएगा ज़रूर!

पिता के यह कहने पर कि समय आ गया है, पुत्र हिचकिचाया नहीं: ''सो जो बादल

पर बैठा था, उसने पृथ्वी पर अपना हंसुआ लगाया'' (आयत 16क)।[14] मूल में, उसने पृथ्वी पर अपना हंसुआ ''फेंका।''[15] अपने मन में मैं हंसुए को बूमरैंग (ऑस्ट्रेलिया का लकड़ी का अस्त्र जो लम्बा चक्र करके फैंकने वाले के पास लौट आता है) की तरह तेज़ी से घूमता है कि दाग़ रहता है। यह पूरी पृथ्वी पर उड़कर गेहूं को पृथ्वी के बन्धन से छुड़ा लेता है।

''और पृथ्वी की लवनी की गई'' (आयत 16ख)। जैसा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु द्वारा दिखाया गया था उसके बाद गेहूं ''खत्ते में'' इकट्ठी की जानी थी (मत्ती 3:12; देखें मत्ती 13:30; लूका 3:17)। यह हमें यह याद दिलाने का सजीव ढंग है कि एक दिन प्रभु अपने लिए अपने लोगों को इकट्ठा करेगा।

> क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:16, 17)।[16]

वह दिन कितना तेज से भरा होगा! यह कटनी का सुखद पहलू है। ''जो इन बातों की गवाही देता है, वह यह कहता है, 'हां, मैं शीघ्र आने वाला हूं।' आमीन। हे प्रभु यीशु आ'' (22:20)!

कटनी और मन की पीड़ा (14:17-20)

कटनी के समय का दुखद पहलू भी होगा, और दर्शन में आगे यही बताया गया है। ''फिर एक और स्वर्गदूत उस मन्दिर में से निकला, जो स्वर्ग में है, और उसके पास भी चोखा हंसुआ था'' (आयत 17)। कटनी के इस भाग को दाख की कटाई के रूप में दिखाया गया है, इसलिए हमें शायद स्वर्गदूत के औज़ार को आम इस्तेमाल में आने वाले हंसुए के रूप में नहीं, बल्कि छंटाई करने वाली हुक के रूप में इस्तेमाल की जा सकने वाली छोटी किस्म के रूप में देखना चाहिए। '''हंसुआ' शब्द का अनुवाद 'छांटने वाली हुक' या 'काटने वाली हुक' भी किया जा सकता है।''[17]

''फिर एक और स्वर्गदूत जिसे आग पर अधिकार था,[18] वेदी में से निकला'' (आयत 18क)। शायद यह वही स्वर्गदूत है, जिसे हमें अध्याय 8 में मिले थे, जिसने वेदी पर धूप चढ़ाई थी, जिसका धुआं पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के साथ मिल गया था। धूप चढ़ाने के बाद स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर वेदी में से आग लेकर फैंक दी थी (8:3-5)। हमने सुझाव दिया था कि उसके कार्य ''वेदी के नीचे के'' उन शहीदों की पुकार के उत्तर में थे, जिन्होंने ''बड़े शब्द से पुकार कर कहा; हे स्वामी हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और ... हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा?'' (6:9, 10)। अध्याय 14 के अन्त की घटनाओं को हमें उनकी पुकार के परमेश्वर के पुत्र के रूप में देखना चाहिए: वास्तव में परमेश्वर कहता है, ''अन्त में, तुम्हारा बदला लेने का समय आ गया है!''

वेदी में से स्वर्गदूत ने ''जिसके पास चोखा हंसुआ था, उससे ऊंचे शब्द से कहा; अपना चोखा हंसुआ लगाकर पृथ्वी की दाख लता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उसकी दाख पक चुकी है'' (आयत 18ख)। यूनानी शब्द के अनुवाद ''पक'' का अर्थ ''तैयार होना'' है। याकूब ने इसी शब्द का इस्तेमाल किया जब उसने कहा कि ''पाप जब बढ़ जाता है तो मृत्यु को जन्म देता है'' (याकूब 1:15)।

कटनी की आज्ञा आने पर, फिर कोई हिचकिचाहट नहीं थी। ''और उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ डाला, और पृथ्वी की दाख लता का फल काटकर,'' इकट्ठा कर लिया (आयत 19क)। परन्तु इस बार कटी हुई फसल सुरक्षित जगह इकट्ठी नहीं की गई थी बल्कि स्वर्गदूत ने दाखलता का फल ''अपने परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रस के कुण्ड में डाल दिया'' (आयत 19ख)।

रस का कुण्ड एक बड़ा सा बर्तन होता था, जिसमें से एक पाइप नीचे के बर्तन में जाती थी। दोनों बर्तन चट्टान में बने हो सकते हैं या उन्हें ईंटों से बनाया जाता था। दाख को ऊपर वाले बर्तन में डाला जाता था जो वास्तविक ''रस का कुण्ड'' था। कई बार दाख को भारी वज़न से निचोड़ा जाता था, परन्तु आमतौर पर उन्हें पैरों से लताड़ा जाता था (यशायाह 63:3)। इस प्रकार निकलने वाला रस[19] निचले बर्तन में बह जाता था, जिसे ''दाख रस का कुण्ड'' कहा जाता था (हग्गै 2:16)।

पुराने नियम में रस के कुण्ड में दाख के इस निचोड़े जाने का रूपक परमेश्वर के न्याय के रूप इस्तेमाल होता था (यशायाह 63:3; विलापगीत 1:15; योएल 3:13)। सताए जा रहे मसीही लोगों के लिए इस संकेत का विशेष अर्थ होगा: जिस प्रकार उनके सताने वालों ने उन्हें लताड़ा था, वैसे ही उनके दमनकारियों ने कुचला जाना था। जूलिया वार्ड होअ ने ''बैटल हिम्न ऑफ़ द रिपब्लिक'' में पुराने नियम के लेखों और प्रकाशितवाक्य की भाषा की महक भर दी:

> मेरी आंखों ने आने वाले
> प्रभु की महिमा को देख लिया;
> वह उस दाख की उपज रौंद रहा है
> जहां क्रोध के दाख रखे हुए हैं;
> उसने अपनी भयानक तेज़ तलवार की
> चौंधियाने वाली चमक छोड़ दी है;
> उसकी सच्चाई आगे बढ़ती जा रही है।[20]

''और नगर के बाहर उस रस के कुण्ड में दाख रौंदे गए''[21] (आयत 20क)। (मिस्र में इस्तेमाल होने वाला रस का कुण्ड का चित्र देख।) अध्याय 19 के अनुसार यीशु स्वयं ''सर्वशक्तिामान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा'' (आयत 15)। उसके ऐसा करते हुए यह निचले बर्तन में जाने वाला दाख का रस नहीं बल्कि दुष्टों का लहू होगा![22]

दर्शन में वह लहू दाखरस के कुण्ड से छलकता हुआ पृथ्वी पर फैल गया और ऊंचा उठता गया।[23] ''और रस के कुण्ड में से इतना लोहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुंचा, और सौ कोस तक बह गया'' (आयत 20ख)। लहू चार से पांच फुट गहरा था[24] और सैकड़ों मील तक भर गया!

मूल अर्थ निकालने वालों को उस आकार के लहू के कुण्ड की अवधारणा समझ नहीं आती।[25] एक आम आदमी के शरीर में लगभग पांच किलो[26] लहू होता है, जो तीन सौ घन इंच से थोड़ा कम है।[27] समझाने के लिए, लहू की नदी को दो सौ मील लम्बी, एक मील चौड़ी और चार फुट गहरी मान लेते हैं। इतने आकार के नाले में 120 अरब से अधिक लोगों के लहू की आवश्यकता होगी, परन्तु वर्तमान में पूरे संसार की जनसंख्या ''केवल'' छह अरब है। कुछ मूलवादी लोग यह कहकर कि लहू चार से पांच फुट ऊंचा ''उठा'' इस दुविधा से बचने की कोशिश करते हैं, परन्तु वचन ऐसे नहीं कहता। एक बार फिर हम सांकेतिक भाषा को अक्षरश: लेने की व्यर्थथता को देखते हैं।

संकेत लहू नापने के अभ्यास के रूप में नहीं बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह को नज़रअंदाज़ करने की त्रासदी के विस्तार पर जोर देने के लिए किया गया है। मूल धर्मशास्त्र में ''सौ कोस'' के बजाय सोलह सौ *stadia* है।[28] *Stadion* लगभग 607 फुट बराबर के रोमी माप के लिए यूनानी शब्द है,[29] परन्तु मुख्य वाक्यांश ''सोलह सौ'' है। सोलह सौ मनुष्य जाति के अंक (''चार'') को चार से गुणा करने के समान है, जिसे सम्पूर्णता के अंक (''दस'') को उसी से गुणा करने पर मिलता है। एक आरम्भिक पाठ में हमने गणना की थी कि ''1,600'' का संकेत ''मानवीय स्तर पर पूर्णता'' है।[30]

इसे सरल परन्तु दुखद अर्थ में लें तो ''1,600'' का अर्थ है कि जिन्हें दण्ड दिया जाना है उनमें से एक भी दण्ड से बचेगा नहीं! राबर्ट माउंस ने लिखा है, ''परमेश्वर का न्याय ... *हर जगर सब मनुष्यों* तक है जो अपने आप को ईश्वरीय सुरक्षा की सीमा से बाहर समझते हैं।''[31] मार्टिन फ्रैंज़मैन ने लहू की नदी की तस्वीर के सम्बन्ध में कहा:

> ... उस नाले का माप कठोर और अपश्चातापी मनों पर परमेश्वर के जमा हुए क्रोध का नाप (2:5), और पशु द्वारा चलाए विश्वव्यापी विद्रोह में शामिल होने वाले की भद्दी भूल का माप भी है।[32]

मैंने अपने छात्रों को उस भयंकर दृश्य अर्थात सैकड़ों वर्गमीलों में फैले लहू, दुर्गंध, आतंक के दृश्य को विस्तार से बताने का विचार किया। परन्तु मैंने पाया कि दो सौ मील लम्बी और चार फुट गहरी लहू की नदी का उल्लेख ही हर सुनने वाले के चेहरे पर उदासी लाने के लिए काफ़ी था।

इस भयानक दृश्य का उद्देश्य हमारे मनों में यह प्रभाव देना है कि *परमेश्वर पाप के प्रति गम्भीर है*। निर्गमन पर पढ़ाते हुए रिचर्ड रोजर्स[33] ने फिरौन के प्रश्न ''यहोवा कौन है, कि मैं उसका वचन मानूं ... ?'' (निर्गमन 5:2) की ओर ध्यान दिलाया। बाद में रिचर्ड मिस्र के पहिलौठे की मृत्यु तथा लाल समुद्र में फिरौन की सेना के डूबने के बारे में बताता

है। फिर वह फिरौन के पास चलकर जाने की कल्पना करते हुए कहता है, ''फिर से वही प्रश्न पूछना!''[34] आज संसार मज़ाक करते हुए पूछता है ''यहोवा कौन है कि हम उसके वचन को सुनें?'' हर व्यक्ति परमेश्वर के क्रोध के दाख के रस के कुण्ड के हत्याकांड को देखकर फिर यही प्रश्न पूछे!

सारांश

अध्याय 14 के अन्य दर्शनों की, कटनी के दृश्य के मुख्यतया दो उद्देश्य थे। पहला, यह सताए जा रहे मसीही लोगों को शांति देने के लिए था। ''इस दृश्य का परदा गिरने पर, झांकी देखने वालों के मन आनन्दित हो रहे होंगे।''[35] दूसरा, कटनी का दृश्य मसीही लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए दिया गया था, जो अपने विश्वास को त्यागने की परीक्षा में पड़े थे। जेम्स मौफेट ने लिखा है:

> बहुत करके यह ऐसे दृढ़ विचारों के फैलाव के कारण था, जो अपोकलिप्स में बताए गए कि मसीही लोग अपने विश्वास के प्रति वफ़ादार थे और यह कि बिना आंखों में आंसू लाए और हाथों में तलवार लिए वे साम्राज्य के हाथों में अपने दावों की पहचान कराकर अन्ततः संसार का रूप बदलने में सफल रहे थे।[36]

अभी अध्ययन की गई आयतों का सार चाहिए तो आपको गलातियों 6:7, 8 के शब्दों से बढ़िया कहीं नहीं मिलेगा:

> धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।

दिन-प्रतिदिन हमारे स्वभाव शांति या विनाश के लिए, स्वीकृति या ठुकराए जाने के लिए, अनन्त जीवन या अनन्त मृत्यु के लिए तैयार हो रहे हैं। प्रभु के वापस आने पर आपको सुरक्षा के उसके खत्ते में जमा किया जाएगा या परमेश्वर के क्रोध के दाख के रस के कुण्ड में लताड़ा जाएगा?[37]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ के वैकल्पिक शीर्षकों में ''न्याय का होना तय है'' और ''अन्त का पूरा होना'' हो सकते हैं। ''एक बड़ा दिन आने वाला है'' इस पाठ में दिए जाने वाले ज़ोर से जुड़ा गीत है; इस गीत का इस्तेमाल पाठ के शीर्षक के रूप में किया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]पुराने नियम में न्याय की बात करने के लिए कटनी का रूपक अक्सर इस्तेमाल किया जाता था (यशायाह 63:1-6; यिर्मयाह 51:33; सभोपदेशक 1:15; होशे 6:11)। विशेषकर, देखें योएल 3:13 जिसमें प्रकाशितवाक्य 14:14-20 वाली भाषा ही मिलती है। [2]यीशु ने भी सुसममाचार प्रचार के लिए प्रोत्साहित करते हुए इसी रूपक का इस्तेमाल किया (मत्ती 9:37, 38; लूका 10:2; यूहन्ना 4:35-38)। [3]ऐसे ही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने भी न्याय के लिए कटनी के विषय का ही इस्तेमाल किया: मत्ती 3:12. [4]यह वाक्य मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 72 से लिया गया था। [5]एम. रॉबर्ट मुल्होलैंड जूनि., *होली लिविंग इन एन अनहोली वर्ल्ड: रैवलेशन,* द फ्रांसिस एस्बरी प्रैस कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: फ्रांसिस एस्बरी प्रैस, ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1990), 251. 14 से 16 आयतों और 17 से 20 आयतों की समानताओं का चार्ट यह साबित करते हुए बनाया जा सकता है कि वास्तव में वे उसी कटनी की बात करती हैं। [6]जी.बी.केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (न्यू यार्क: हार्पर एंड रो, 1966), 191. [7]KJV में ''the Son of Man'' है। हस्तलिपि का प्रमाण ''the'' के बजाय ''a'' के पक्ष में है। [8]*ट्रुथ फॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''मनुष्य के पुत्र सा कोई'' में 1:13 पर नोट्स देखें। [9]NASB के अनुवादकों ने स्पष्ट रूप से यही सोचा कि यह यीशु का हवाला है क्योंकि उन्होंने 14:14-16 में ''His,'' ''Him'' और ''He'' में ''H'' को बड़ा रखा जो ईश्वरीयता का संकेत देने के लिए NASB में नमूना बनाया गया था। इसे यीशु होने की बात की व्याख्या पर दो आपत्तियां हैं: यह बात कि स्वर्गदूत उसे बताता है कि कब काटना है ''एक और स्वर्गदूत'' वाक्यांश का इस्तेमाल। दोनों आपत्तियों पर आगे टिप्पणियों में बात की जाएगी। [10]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 279, n. 37.

[11]आपमें से कइयों ने हंसुए के ऊपर करके लगाया हुआ कम्युनिस्टों का हथौड़े का चिह्न देखा होगा। हंसुआ खेती-बाड़ी का प्रतीक है; जबकि हथौड़ा उद्योग का। [12]''एक और स्वर्गदूत'' वाक्यांश का कोई स्पष्ट महत्व नहीं है, वैसे ही जैसे आयत 6 में ''एक और स्वर्गदूत'' वाक्यांश का कोई महत्व नहीं था। (इस पुस्तक में ''बीच हवा में पुलपिट'' वाले पाठ के आरम्भ में देखें।) यह वाक्यांश यह साबित नहीं करता कि ''मनुष्य का पुत्र'' कहलाने वाला स्वर्गदूत है। जैसा पाठ में पहले कहा गया, ''मनुष्य का पुत्र'' यीशु के लिए कहा गया है। यहोवा विटनेस वाले लोग इस बात को मानते हैं कि ''परमेश्वर का पुत्र'' यीशु ही था, तौ भी वे इस आयत को यह ''साबित'' करने के लिए इस्तेमाल करते हैं कि यीशु कोई स्वर्गदूत या सृजा गया प्राणी था। यीशु सृजा नहीं गया था बल्कि उसने सब कुछ रचा था (कुलुस्सियों 1:16)। आयत 6 की तरह, आयत 15 में ''एक और स्वर्गदूत'' वाक्यांश का संकेत केवल इतना है कि यहां पर सेवा में परमेश्वर के एक और दूत को बुला लिया गया था। [13]''समय'' यूहन्ना प्रेरित द्वारा अधिकतर इस्तेमाल किया गया शब्द है, जो इस बात का संकेत है कि सही या उपयुक्त समय के रूप में ठहराया हुआ समय अधिक नहीं है। एक लेखक ने कहा, ''परमेश्वर ठहराई हुई तिथि की नहीं बल्कि उद्देश्य के पूरा होने की प्रतीक्षा करता है।'' (मायर्स पर्लमैन, *विंडो इन टू द फ्यूचर: डिवोशनल स्टडीज़ इन द बुक ऑफ़ रैवलेशन* [स्प्रिंगफील्ड, मिज़ोरी: गॉस्पल पब्लिशिंग हाउस, 1941], 135 में उद्धृत।) [14]कइयों ने इस तथ्य में महत्व ढूंढ़ने की कोशिश की है कि दर्शन में यीशु *अनाज* की कटनी काटता है जबकि स्वर्गदूत *दाख* की कटनी। याद रखें कि यह केवल एक *दर्शन* है। यदि संकेत का कोई महत्व है तो वह यह हो सकता है कि यीशु की मुख्य चिन्ता अपने लोगों के लिए थी। वास्तविकता में यीशु और स्वर्गदूत *दोनों ही* धर्मी और दुष्ट लोगों के ''इकट्ठा होने'' के *हर* पहलू में शामिल होंगे और अन्ततः ''प्रतिफलों'' में (मत्ती 13:41, 49; 16:27; 25:31; मरकुस 8:38; लूका 9:26; 2 थिस्सलुनीकियों 1:7, 8)। [15]NASB वाली मेरी प्रति का मार्जिन नोट है ''[मूल में] cast.'' [16]ये आयतें प्रीमिलेनियलिस्ट लोगों द्वारा कथित ''रैप्चर'' की बात करते समय इस्तेमाल की जाती है। पौलुस पृथ्वी पर हज़ार वर्ष के किसी काल्पनिक राज्य से पहले सात साल मसीही लोगों के पृथ्वी के ऊपर

मंडराते हुए यीशु से मिलने के लिए उठाने की बात नहीं कर रहा था, बल्कि *धार्मिकता के दृष्टिकोण से* मरे हुए के सामान्य जी उठने की बात कर रहा था (यूहन्ना 5:28, 29)। ''पहले'' शब्द का अर्थ ''दुष्टों के जी उठने से पहले'' नहीं है। बल्कि संदर्भ में ''पहले'' का अर्थ है कि मरे हुए मसीही लोग मसीह के वापस आने पर जीवित मसीहियों के यीशु से मिलने के लिए उठाए जाने के लिए जी उठेंगे। मरे हुओं के जी उठने के बाद, सब विश्वासी प्रभु से मिलने के लिए इकट्ठे जाएंगे। [17]टैनी, 71. [18]''आग'' का इस्तेमाल प्रकाशितवाक्य में आमतौर पर परमेश्वर के न्याय के सम्बन्ध में किया गया है। 8:5 में स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर आग फेंकी थी। ''आग पर अधिकार'' का अर्थ केवल इतना हो सकता है कि परमेश्वर ने सही न्याय के विशेष ढंग में स्वर्गदूत का इस्तेमाल किया। [19]''यह ध्यान देने योग्य है कि अंग्रेज़ी में रस के कुण्ड को 'wine' press कहा गया है। प्रैस से 'वाइन' ही निकलती थी। यानी यह नशीली नहीं होती थी। इस प्रकार से 'wine' का अर्थ नशीला पेय ही नहीं होता'' (जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन* [लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सिस, 1976], 222)। [20]जूलिया वार्ड होव, ''बैटल हिम्न ऑफ़ द रिपब्लिक,'' *सौंग्स ऑफ़ फ्रेथ एंड प्रेज़* संकलन व संपादन ऑल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।

[21]टीकाकारों को इस आयत में ''नगर'' शब्द की पहचान में कठिनाई आती है। तस्वीर को पूरा करने के लिए दिए गए विवरण का शायद महत्व इतना नहीं है क्योंकि रस का कुण्ड या वाइन प्रैस आमतौर पर नगर की शहरपनाह से बाहर ही होता था। यदि ''नगर'' को कोई महत्व है तो सम्भतवया ये शब्द अध्याय 21 और 22 में दिए गए ''पवित्र नगर, यरूशलेम'' के लिए है (स्वर्ग का सांकेतिक हवाला)। देखें 22:15 जो यह इशारा करता है कि दुष्ट लोग उस स्वर्गीय निवास के ''बाहर'' हैं (21:27 भी देखें)। यह भी हो सकता है कि 14:20 वाला ''नगर'' इस अर्थ के साथ ''बड़ा बाबुल'' को कहा गया हो कि बाबुल उन्हें बचाने में असहाय था जिन्हें उसने बहकाया था। [22]कई अंगूरों का रंग लाल या बैंजनी होता, जिस कारण उनका रस हमें लहू का स्मरण करा सकता है। यीशु ने बहाए जाने वाले अपने लहू के प्रतीक के रूप में ''दाख का रस'' इस्तेमाल किया (मत्ती 26:29)। [23]कई लेखक इसे कथित ''आरमगिद्दोन की लड़ाई'' के बाद की बर्बादी के रूप में देखते हैं, परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यह रूपक कटनी से लड़ाई में बदल गया। घोड़ों के उल्लेख का कोई सैनिक महत्व नहीं है; ये पाठकों के लिए नई बात नहीं थी और इनका इस्तेमाल लहू की गहराई पर जोर देने के लिए किया गया था। [24]लगाम घोड़े के सिर पर लगे साज़ को कहते हैं, अधिकतर घोड़ों के सिर भूमि से कई फुट ऊपर होते हैं। [25]मूलवादियों (हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वालों) को यह ध्यान देना अच्छा लगता है कि 1,600 *स्टेडिया* पलिश्तीन की लम्बाई जितना है, परन्तु वे दर्शन में दिए गए शेष नापों को नहीं समझा पाते। [26]यह नाप अमेरिकी कुआर्ट के आधार पर है। [27]तरल अमेरिकी कुआर्ट 57.75 घन इंच होता है। [28]NIV में ''stadia'' है। NASB में ''दो सौ मील'' स्पष्टतया यूनानी शब्दों को आज के श्रोताओं को समझाने के लिए बदला गया है, परन्तु इससे पवित्र आत्मा द्वारा इस्तेमाल किया गया संकेत नष्ट हो जाता है। KJV में ''1,600 फर्लांग'' है। (अंग्रेज़ी ''फर्लांग'' लगभग 660 फुट होता है सो यह नाप *स्टेडियन* जितना ही है।) *स्टेडिया, स्टेडियन* का बहुवचन रूप है। [29]सोलह सौ *स्टेडिया* लगभग 184 मील होगा। [30]''चार,'' ''दस'' और ''1,600'' के सांकेतिक महत्व के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में पाठ ''यहां अजगर होंगे!'' देखें

[31]माउंस, 283. [32]मार्टिन एच. फ्रैंज़मैन, *द रैवलेशन टू जॉन* (सेंट लुईस, मिज़ोरी: कॉनकोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1976), 104. [33]रिचर्ड रोजर एक प्रचारक, शिक्षक तथा शिक्षा शास्त्री थे। [34]यह उदाहरण सदर्न हिल्स चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, अबिलेन, टैक्सस, 5 मई 1991 में दिए जॉन रिस्से के संदेश ''इविल बीस्ट्स एंड द विक्टोरियस लैंब'' में इस्तेमाल किया गया था। [35]यह वाक्य रेअ समर्स, *वर्धी इज़ द लैंब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 183 से लिया गया था। [36]जेम्स मौफेट, *एक्सपोज़िटर'स ग्रीक न्यू टैस्टामेंट, अंक 5* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं.), 313. [37]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो अपने प्राणों की आवश्यकताओं को तुरन्त पूरा करने के लिए कहें। इस पुस्तक में ''देखो, सुनो और समझो'' पाठ में टिप्पणी 50 देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. कटनी का रूपक आने वाले न्याय को दर्शाने के लिए उपयुक्त क्यों है ?
2. प्रकाशितवाक्य 14:14-20 में कितनी अन्तिम ''कटनियां'' है ?
3. आयत 14 में ''मनुष्य का पुत्र'' किसे दिखाया गया है ?
4. .उस बादल का महत्व क्या है, जिस पर वह बैठा है ? उस मुकुट का ... जिसे उसने पहना है ? उस औज़ार का ... जो उसके हाथ में है ?
5. पाठ में यह सुझाव क्यों है कि कटनी का पहला भाग *अनाज* की कटनी को दर्शाता है ?
6. अनाज/गेहूं की कटनी लोगों का कौन सा समूह है ?
7. बाइबल के समयों के दाख के रस के कुण्डों का वर्णन करें।
8. अध्याय 19 के अनुसार, परमेश्वर के क्रोध के रस का कुण्ड कौन लताड़ेगा ?
9. दाख को निचोड़े जाने पर दाख के रस के कुण्ड से क्या बहा ? क्या आयत 20 के रूपक का अर्थ अक्षरश: लिया जाना चाहिए ? क्यों ?
10. 1,600 *स्टेडिया* लम्बे लहू के कुण्ड का सांकेतिक महत्व क्या है ?
11. यह संकेत किस प्रकार सिद्ध होता है कि ''परमेश्वर पाप के प्रति गम्भीर है'' ?
12. अपनी जांच के लिए: क्या आप प्रभु के लौटने के लिए तैयार हैं ?

मनुष्य के पुत्र सरीखा बादल पर बैठा कोई (14:14)